२. लघुकथाएँ

– श्रीमती संतोष श्रीवास्तव

लेखक परिचय : संतोष श्रीवास्तव जी का जन्म २३ नवंबर १९५२ को मंडला (मध्य प्रदेश) में हुआ। आपने एम.ए. (इतिहास, हिंदी), बी.एड तथा पत्रकारिता की उपाधियाँ प्राप्त कीं। नारी जागरूकता और उसकी अस्मिता की पहचान आपकी लेखनी के विषय हैं। आपकी रचनाओं में एक ओर वर्तमान स्थितियों तथा सामाजिक विसंगतियों का चित्रण दृष्टिगोचर होता है तो वहीं दूसरी ओर जीवन जीने की छटपटाहट और परिस्थितियों से लड़ने की सार्थक सोच भी है।

प्रमुख कृतियाँ : 'बहके बसंत तुम', 'बहते ग्लेशियर' (कहानी संग्रह) 'दबे पाँव प्यार', 'टेम्स की सरगम', 'ख्वाबों के पैरहन' (उपन्यास), 'फागुन का मन' (ललित निबंध संग्रह), 'नीली पत्तियों की शायराना हरारत' (यात्रा संस्मरण) आदि।

विधा परिचय : 'लघुकथा' हिंदी साहित्य में प्रचलित विधा है। यह गद्य की ऐसी विधा है जो आकार में लघु है पर कथा के तत्वों से परिपूर्ण है। कम शब्दों में जीवन की संवेदना, पीड़ा, आनंद को सघनता तथा गहराई से प्रस्तुत करने की क्षमता इसमें होती है। किसी परिस्थिति या घटना को लेखक अपनी कल्पना का पुट देकर रचता है। हिंदी साहित्य में डॉ. कमल किशोर गोयनका, डॉ. सतीश दुबे, संतोष सुपेकर और कमल चोपड़ा आदि प्रमुख लघुकथाकार हैं।

पाठ परिचय : 'उषा की दीपावली' लघुकथा अनाज की बरबादी पर बालमन की संवेदनशीलता और संस्कारों को जाग्रत कराती है। एक ओर थालियाँ भर-भरकर जूठन छोड़ने वाले लोग हैं तो दूसरी ओर अनाज के एक-एक कौर को तरसते और विभिन्न तरीकों से रोटी का जुगाड़ करते लोग हैं। 'मुस्कुराती चोट' लघुकथा आर्थिक अभाव के कारण पढ़ाई न कर पाने की विवशता तथा मजदूरी करके अपनी पढ़ाई जारी रखने की अदम्य इच्छा को दर्शाती है। यह बाल मजदूरी जैसी समस्या को इंगित करते हुए हौसला देती, आशावाद को बढ़ाती सकारात्मक और संवेदनशील लघुकथा है।

(अ) उषा की दीपावली

दादी ने नरक चौदस के दिन आटे के दीप बनाकर मुख्य द्वार से लेकर हर कमरे की देहरी जगमगा दी थी। घर पकवान की खुशबू से तरबतर था। गुझिया, पपड़ी, चकली आदि सब कुछ था। मगर दस वर्षीय उषा को तो चॉकलेट और बंगाली मिठाइयाँ ही पसंद थीं। दादी कहती हैं कि – ''तेरे लिए तेरी पसंद की मिठाई ही आएगी। यह सब तो पड़ोसियों, नाते-रिश्तेदारों, घर आए मेहमानों के लिए हैं।''

आटे के दीपक कंपाउंड की मुंडेर पर जलकर सुबह तक बुझ गए थे। उषा जॉगिंग के लिए फ्लैट से नीचे उतरी तो उसने देखा पूरा कंपाउंड पटाखों के कचरे से भरा हुआ था। उसने देखा, सफाई करने वाला बबन उन दीपों को कचरे के डिब्बे में न डाल अपनी जेब में रख रहा था। कृशकाय बबन कंपाउंड में झाड़ू लगाते हुए हर रोज उसे सलाम करता था। ''तुमने दीपक जेब में क्यों रख लिए ?'' उषा ने पूछा। ''घर जाकर अच्छे से सेंककर खा लेंगे, अन्न देवता हैं न।'' बबन ने खीसे निपोरे।

उषा की आँखें विस्मय से भर उठीं। तमाम दावतों में भरी प्लेटों में से जरा-सा टूँगने वाले मेहमान और कचरे के

डिब्बे के हवाले प्लेटों का अंबार उसकी आँखों में सैलाब बनकर उमड़ आया। वह दौड़ती हुई घर गई। जल्दी-जल्दी पकवानों से थैली भरी और दौड़ती हुई एक साँस में सीढ़ियाँ उतर गई........ अब वह थी और बबन की काँपती हथेलियों पर पकवान की थैली। उषा की आँखों में हजारों दीप जल उठे और पकवानों की थैली देख बबन की आँखों में खुशी के आँसू छलक आए।

× ×   × ×

(आ) मुस्कुराती चोट

घर में बाबा बीमार थे । उनकी दवाई, राशन के लिए पैसे चाहिए थे । माँ चार घर में चौका-बर्तन करके जितना लाती वह सब बाबा की दवाई और घर में ही लग जाता । बबलू की पढ़ाई बीच में ही छूट गई । माँ को सहारा देने के लिए बबलू ने घर-घर जाकर रद्‌दी इकट्‌ठा करना शुरू कर दिया पर पढ़ाई के प्रति लालसा बनी हुई थी । उस दिन भी तराजू पर रद्‌दी तौलते हुए बबलू की नजर लगातार स्कूल की उन किताबों पर थी जिसे रद्‌दी में बेचा जा रहा था । वह चाह रहा था कि वे किताबें उसे मिल जाएँ ।

''स्कूल नहीं जाता तू ? अजीब हैं तेरे माँ-बाप जो तुझसे काम कराते हैं ।'' घर की मालकिन ने तराजू के काँटे पर नजर जमाए कहा । तभी उनकी कॉलेज के लिए तैयार होती लड़की ने कहा – ''माँ, बाल मजदूरी तो अपराध है न ?'' ''हाँ बिल्कुल, पर अनपढ़ माँ-बाप समझें तब न'', बबलू को बुरा लगा । उससे अपशब्द सहे नहीं गए ।

''स्कूल बप्पा ने भेजा था मेमसाब पर उनके पास किताबों के लिए पैसे न थे इसलिए पढ़ाई रुक गई ।''

''माँ, इससे इन किताबों के पैसे मत लो । इसके काम आएँगी । वह इनसे अपनी पढ़ाई कर लेगा ।''

''कुछ नहीं होता इससे, हम फ्री में देंगे और यह रद्‌दी पेपर के मालिक से किताबों के पैसे ले चाट-पकौड़ी में उड़ा देगा । इनके बस का नहीं है पढ़ना ।''

बबलू ने रद्‌दी के पैसे चुकाए और बोरा उठा सीधा घर पहुँचा । उसने बोरे में से किताबें निकालकर अलग रख दीं । फिर बोरा लेकर वह रद्‌दी पेपर के दुकानदार के पास पहुँचा । दुकानदार ने रद्‌दी तौल किनारे रखी ।

''पैसे तो बचे होंगे तेरे पास । जा, सामने के ठेले से वड़ा-पाव और चाय ले आ फिर हिसाब कर ।'' बबलू सिर झुकाए खड़ा रहा । दुकानदार बार-बार बोलता रहा पर बबलू टस-से-मस न हुआ । अब दुकानदार से रहा नहीं गया । वह झल्ला उठा ।

''अरे क्या हुआ ? जाता क्यों नहीं ?''

''रुपये खर्च हो गए सेठ ।''

''क्या ! तेरे पैसे थे जो खर्च कर दिए !'' दुकानदार ने उसको बुरी तरह से डाँट दिया । डाँट खाने के बावजूद वह मुस्कुरा रहा था । अब वह स्कूल जा सकेगा । उसके पास भी किताबें हैं । वह घर की ओर लौट पड़ा ।

पुस्तक लेकर घर से आते हुए रास्ते में वही सुबहवाली मालकिन और उनकी लड़की मिल गई । उसके हाथ में किताबें देख मालकिन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा । उसे सुबह कहे हुए अपने ही अपशब्द याद आ गए और अपने ही शब्दों पर अपराध बोध हो आया । बबलू की पढ़ाई के प्रति लालसा को देखकर उसने निश्चय किया कि अब उसकी आगे की पढ़ाई का खर्चा वही उठाएगी । बबलू की खुशी का ठिकाना न था ।

('फैसला' लघुकथा संग्रह से)

— ० —

शब्दार्थ :

देहरी = दहलीज
तरबतर = गीला, भीगा
कृशकाय = दुबला-पतला शरीर
बेरहमी = निर्दयता, दयाहीनता

स्वाध्याय

आकलन

१. लिखिए :

(अ) दावत में होने वाली अन्न की बरबादी पर उषा की प्रतिक्रिया –

....

....

(आ) संवादों का उचित घटनाक्रम –

(१) ''रुपये खर्च हो गए मालिक''
(२) ''स्कूल नहीं जाता तू? अजीब है...!''
(३) ''अरे क्या हुआ ! जाता क्यों नहीं ?''
(४) ''माँ, बाल मजदूरी अपराध है न ?''

शब्द संपदा

२. (अ) समूह में से विसंगति दर्शानेवाला कृदंत/तद्धित शब्द चुनकर लिखिए –

(१) मानवता, हिंदुस्तानी, ईमानदारी, पढ़ाई
(२) थकान, लिखावट, सरकारी, मुस्कुराहट
(३) बुढ़ापा, पितृत्व, हँसी, आतिथ्य
(४) कमाई, अच्छाई, सिलाई, चढ़ाई

(आ) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए शब्दों के वचन परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए –

(१) पेड़ पर सुंदर फूल खिला है ।
(२) कला के बारे में उनकी भावना उदात्त थी ।
(३) दीवारों पर टँगे हुए विशाल चित्र देखे ।
(४) वे बहुत प्रसन्न हो जाते थे ।
(५) हमारी-तुम्हारी तरह इनमें जड़ें नहीं होतीं ।
(६) ये आदमी किसी भयानक वन की बात कर रहे थे ।
(७) वह कोई बनावटी सतह की चीज है ।

(इ) निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिवर्तन करके प्रत्येक का वाक्य में प्रयोग कीजिए –

अध्यापक, रानी, नायिका, देवर, पंडित, यक्ष, बुद्धिमान, श्रीमती, दुखियारा, विद्वान

परिवर्तित शब्द		वाक्य में प्रयोग	
(१)	....	(१)	....
(२)	....	(२)	....
(३)	....	(३)	....
(४)	....	(४)	....
(५)	....	(५)	....
(६)	....	(६)	....
(७)	....	(७)	....
(८)	....	(८)	....
(९)	....	(९)	....
(१०)	....	(१०)	....

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'अन्न बैंक की आवश्यकता', इसपर अपने विचार लिखिए।

(आ) 'शिक्षा से वंचित बालकों की समस्याएँ', इस विषय पर अपना मत लिखिए।

पाठ पर आधारित लघूत्तरी प्रश्न

४. (अ) 'उषा की दीपावली' लघुकथा द्‌वारा प्राप्त संदेश लिखिए।

(आ) 'मुस्कुराती चोट' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. जानकारी दीजिए :

(अ) संतोष श्रीवास्तव जी लिखित साहित्यिक विधाएँ –

....

....

(आ) अन्य लघुकथाकारों के नाम –

....

....